रात्रिक्लास 8/6/68 ओमशान्ति बापदादा और वरसा याद है?

प्रदर्शनी का समाचार जो जिस पार्टी को समझाते हैं बाबा को बताने से बाबा फिर राय देंगे, ऐसे2 भी समझाना चाहिए। पहले2 बाप का पूरा परिचय देना है। अलफ न समझा तो ब ब(पे) फालतू है। यह पक्का समझना। दिल होती है आगे समझाने; परन्तु बाबा कहते हैं पहले2 अलफ। बेहद का बाप बेहद का वरसा देने वाला है। यह राजयोग सिखाया था। अभी फिर सिखाये रहे हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो सभी पाप भस्म हो जावेंगे। यह योग अग्नि है। उनसे ही तुम पवित्र बन जावेंगे। कहते भी हैं पतित पावन आओ। यह है सारी पतित दुनिया। मनुष्य सभी पतित हैं। बोलने में हर्जा नहीं है। पतित से फिर पावन बनना है। यह परिचय तो जरूर देना है। और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। अपन को आत्मा समझ। अपन को रूह समझ यह नॉलेज लेते हैं। देह अभिमानी कुछ समझ नहीं सकते हैं। यह है शिवबाबा का बेहद का भण्डारा। शिवबाबा तो खाते–पीते नहीं हैं। उनको सर्विस के लिए ही बुलाया है। सो तो सर्विस कर रहे हैं। बाप बच्चों को सर्विस करते देख कितना खुश होता है। ड्रामा बड़ा वन्डरफुल फर्स्ट क्लास बना हुआ है। नाम ही है ज्ञान–भक्ति। दिन–रात, सुख–दुःख। बाप आकर बच्चों को अच्छी रीत समझाते हैं। बाप ही दुनिया को बदलेंगे। यह भी तुम जानते हो भक्तिमार्ग के गुरुओं की तो बादशाही है। इनकी अभी पिछाड़ी है। बहुत समझते हैं यह सन्यासी क्या करते हैं। भारत की सेवा तो करते ही नहीं हैं। भ्रष्टाचारी श्रेष्टाचारी बना कैसे सकेंगे; परन्तु वह समझते हैं सन्यासी श्रेष्ठाचारी हैं; परन्तु तुम समझाते हो वह भी भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी तो ल॰ना॰ हैं। इन्हों की महिमा ही ऊँची है। सन्यासियों का पार्ट तो पीछे का है, निवृति मार्ग का। रात–दिन का फर्क है; परन्तु मनुष्यों की बुद्धि पर ऐसी ही जंक चढ़ी हुई है। जो कुछ भी समझते नहीं हैं। जो याद से जंक को निकालते हैं वह नई दुनिया का मालिक बन जाते हैं। किचड़ा आग में जलाया जाता है ना। यह भी सारी दुनिया को आग लगनी है। भंभोर को आग लगनी है। सीढ़ी का चित्र मुख्य है। किसको भी समझा कर देंगे तो झट लेंगे। यह तो बाबा समझते हैं यहां जो बैठे हैं स्वदर्शनचक्रधारी तो हैं ही। बाबा की याद आने से दैवीगुण भी धारण करना है। शिवबाबा स्वर्ग रचते हैं। स्वर्ग में होते ही हैं सर्व गुण सम्पन्न। अलफ़ को याद करने से बादशाही मिलती है। देवताएं हैं ही सर्व गुण सम्पन्न..... यहां है हिंसा वहां है अहिंसा। बड़ी ते बड़ी हिंसा है काम कटारी चलाना। बाप कहते हैं इन पर विजय पाई तो यह बनेंगे। गारन्टी है। दैवी गुण जरूर आवेंगे। पत्थर बुद्धि हैं ना। आगे चलकर इन्हों की हड्डियां भी नरम होंगी। सतोप्रधान देवताओं को, तमोप्रधान, असुरों को कहा जाता है। बाप से वर्सा लेना बहुत सहज है। तो हम भी वरसे के हकदार बन जावेंगे। दैवी गुण भी धारण करनी है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए।